आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:19-10-14

ईश्वरीय ज्ञान, गुणों और शक्तिओं से हम आत्माओं को भरपूर कर मास्टर सर्वशक्तिवान बनाकर परमात्म प्रत्यक्षता कराने के निमित बनाने वाले, बापदादा ने कहा, परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता और सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता.

आज भी लोग कहते है कि ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान, राजयोग अच्छा है, जीवन परिवर्तन करा देता है. लेकिन लोग यह नहीं जानते कि ब्रह्माकुमारीज को यह ज्ञान, गुणों और शक्तिओं से भरपूर करने वाला तो सर्वशक्तिमान, सर्व मनुष्य आत्माओं का पिता, स्वयं परमपिता-परमात्मा शिव हैं. ब्रह्माकुमारीज की प्रशंसाओं के पीछे, उन्हें इस लायक बनाने वाली जो परमात्म शक्ति है उसे नहीं जानते.

बापदादा ने आज की मुरली में यही स्पष्ट किया की अभी हमें ऐसी सेवा करनी ही है की जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने, उनके द्वारा यह आवाज निकले की भगवान, स्वयं इस धरा पर आ चुका हैं. उन्हें अहसास हो की स्वयं परमात्मा इन ब्रहमाकुमार-कुमारीज द्वारा कार्य करवा रहा हैं. इसे ही चारों और आवाज फैलेगा, सब धर्मवाली आत्माये कहेगी - "बाप आ गया." इसे ही परमात्मा की प्रत्यक्षता होगी.

- परमात्म प्रत्यक्षता हो इस के लिए क्या धारणा करनी है?

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता. सत्यता ही प्रत्यक्षता है. एक है स्वयं के प्रति सत्यता, दूसरी है सेवा के प्रति सत्यता. सत्यता आधार है स्वच्छता और निर्भयता का. सत्यता के आधार से इन दोनों धारणाये हमारे में आयेगी और इसे ही परमात्म प्रत्यक्षता हो जायेंगी.

- किस तरह की हमारे में सत्यता हो?

सत्यता यानी सच्चाई है, मैं जो हूँ, जैसा हूँ - सदा उस ऑरिजिनल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना ही हैं. स्वयं की आत्म-अभिमानी स्थिति हो. आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता हैं. बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात सत्यता की सतोप्रधानता हो. सत्यता नेचरल संस्कार

के रुप में हो. जैसे बाप को टुथ अथवा सत्य कहते है वैसे ही आपकी आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता सत्य और टुथ हो. ऐसी सत्यता को सतोप्रधानता कहा जाता हैं और इसके आधार से हम स्वच्छता और निर्भयता को धारण कर जब सेवा करेंगे तो बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा.

- किस तरह की सच्चाई और सफाई हमारे में हो?

सफाई अर्थात स्वच्छता. जरा भी संकल्प मात्र भी अशुद्धि अर्थात बुराई को वा अवगुण को टंच किया वा धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे. जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टंच करना हुआ. सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं. सफाई अर्थात स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो.

- बापदादा किस बात में हमारे में निर्भयता देखना चाहते है?

बापदादा हमारे में तीन बातों में निर्भयता धारण कराना चाहते है.

१. अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता. क्या करूँ होता नहीं, संस्कार बहुत प्रबल हैं - यह निर्भयता नहीं.

२. अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना - इसमें भी निर्भयता हो. पता नहीं चल सकेंगे, निभा सकेंगे, मेरा मानेंगे या नहीं मानेंगे इसमें भी अगर भयता है तो इसको भी सम्पूर्ण निर्भयता नहीं कहेंगे.

३. विश्व की सेवा में अर्थात सेवा के क्षेत्र में वायुमण्डल या अन्य आत्माओं के सिद्धान्तों की परिपक्वता को देखते हुए उन्हों की परिपक्वता या वायुमण्डल का प्रभाव पड़ना भी निर्भयता नहीं हैं. यह बिगड़ जायेंगे, हंगामा हो जायेगा, हलचल हो जायेगी इसमें भी निर्भयता हो.

बापदादा कहते है आप आत्म ज्ञानी आत्मायें सारे मनुष्य सृष्टि के कल्पवृक्ष की तना हो, बाकी विश्व की सर्व आत्माये तो मनुष्य सृष्टि के कल्पवृक्ष की शाखाये हैं. आप आत्माये उनके आधार हो तो निर्भय हो कर बाप से मिला श्रेष्ठ मत वा अनादि-आदि सत्य को निःसंकोच होकर प्रत्यक्ष करो. निर्भय बनो.

ॐ शांति.